प्रातःक्लास ओमशांति 13.9.67

ओमशांति। स्टुडेंट जब पढ़ते हैं तो खुशी से पढ़ते हैं। रुहानी बच्चे भी जानते हैं बेहद का बाप जो टीचर भी है हमको बहुत रूचि से पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई में तो बाप अलग होता है ,टीचर अलग होता है। अगर कोई बाप ही टीचर होता है तो बहुत रूचि से पढ़ाते हैं ;क्योंकि फिर भी ब्लड कनेक्शन होता है। अपना समझकर बहुत रूचि से पढ़ाते हैं। यहां यह है रुहानी बाप। जो रुहानी टीचर भी है। तो सभी बच्चे हो। बाप ही अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। कितना रूचि से पढ़ाते होंगे। बच्चों को भी कितना रूचि से पढ़ना चाहिए ;क्योंकि डायरैक्ट बाप पढ़ाते हैं और एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। बच्चों को रूचि बहुत चाहिए। बाबा भगवान हमको पढ़ाते हैं और अच्छी रीति हरेक बात समझाते रहते हैं। कई2 बच्चों को पढ़ते2 विचार आती है यह क्या है। ड्रामा में यह आवागमन का चक्र है ;परंतु यह नाटक रचा ही क्यों है?इनसे क्या फायदा?बस, फिर ऐसे चक्र लगाते रहेंगे। इनसे तो छूट जावें तो अच्छा है। जब देखते हैं यह तो 84का चक्र लगाते ही रहना हैं तो ऐसे2 खयाल आती है। भगवान ने ऐसा खेल क्यो रचा है जो आवागमन से छूट नहीं सकते। इससे तो मोक्ष मिल जाये। ऐसे2 खयालात कई बच्चों को आती है। इस आवागमन से ,सुख–दुःख से छूट जावें। बाप कहते हैं यह कब हो नहीं सकता। मोक्ष के लिए पुरुषार्थ करना ही व्यर्थ हो जाता। बाप ने समझाया है एक भी आत्मा पार्ट से छूट नहीं सकता। आत्मा में कितनाअविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह है ही अनादि अविनाशी। बिल्कुल एक्युरेट अंदाज एक्टर्स का है। एक भी कम–जास्ती नहीं हो सकता। तुम बच्चों को सारी नालेज है। इस ड्रामा के पार्ट से कोई भी छूट नहीं सकता। न मोक्ष पाय सकते। सब धर्म वालों को नम्बरवार आना ही है। बाप समझाते हैं यह तो बना बनाया अविनाशी ड्रामा है। तुम भी कहते हो बाबा अब हम जान गये हैं कैसे हम पूरा 84का चक्र लगाते हैं। यह भी समझते हो जो पहले2 आते हैं वह ही 84जन्म लेते होंगे। पीछे आने वाले का जरूर कम जन्म होगा। छूटी(छुट्टी) की बात नहीं। यहां तो पुरुषार्थ करने का है। पुरानी दुनियां से नई दुनियां जरूर बननी है। बाबा हर (बात) बार2 समझाते रहते हैं ;क्योंकि नये2 आते हैं उनका(उनको) आगे की पढ़ाई कौन पढ़ावे?तो बाप नये2 को देख2 कर फिर पुरानी प्वाइंट्स रिपीट करते हैं। मुख्य है गीता। बच्चों को गीता को रेफरेंस पहले2 देना होता है ;क्योंकि कह देते हैं बाप सर्वव्यापी है। कुत्ते–बिल्ले में कह देते हैं ;क्योंकि सा. जो करते हैं गणेश का,हनुमान का,जिसकी पूजा करते हैं सा. हो जाता है। तो समझते हैं भगवान सबमें है। इसलिए सा. होता है। दूसरी बात मूंझ क्यों है?शास्त्रों में सर्वव्यापी की बात क्यों आई है?क्योंकि यहां तुम बच्चे हो। बाप कोई2 बच्चों में प्रवेश करते हैं तो समझते हैं परमात्मा सबमें है। प्रवेश हो वाणी सुनाते है। सब प्रवेश करते नहीं हैं। पत्थर–भित्तर में भी कह देते हैं परमात्मा है। बच्चियां खुद अपना अनुभव सुनाती हैं। आज तो जैसे बाबा ने प्रवेश कर बड़ा जोर से मुरली चलाई। बहुत खुशी हुई। बहुतों को उठाया। और मनुष्य तो नेति2 करते आये हैं। हम नहीं जानते। दुनियां में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है जो रचता और रचना की आदि,मध्य,अंत को जानता हो। जैसे तुम अभी जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में अभी सारा नालेज है। जानते हो शुरू से ही लेकर कैसे हम पार्ट बजाते आये हैं। तुम यथार्थ रीति जानते हो। कैसे यह चक्र फिरता है। कैसे नम्बरवार आती हैं। कितने जन्म लेते हैं। इस समय ही बाप आकर ज्ञान की बातें सुनाते हैं। सतयुग में तो है ही प्रालब्ध। यह इस समय तुमको ही समझाया जाता है। गीता में भी शुरू और अंत में यह बात ही आती है मनमनाभव। पढ़ाया जाता है स्टेटस पाने लिए। राजा–रानी बनने लिए अब पुरुषार्थ करते हैं। और धर्म वालों को तो समझाया जाता है। वह नम्बरवार आते हैं। धर्मस्थापक के पिछाड़ी सबको आना होता है। राजाई की बात नहीं। एक ही गीता शास्त्र है जिसकी बहुत महिमा है। भारत में ही बाप आकर सुनाते हैं। और सबकी सदगति करते हैं। वह धर्मस्थापक जो आते हैं ,वह जब मरते हैं तो फिर बड़ी तीर्थ बनाय

देते हैं। वास्तव में सबका तीर्थ यह भारत ही है, जहां बेहद का बाप आते हैं। बाप ने भारत में ही आकर सर्व की सदगति की है। बाबा कहते हैं तुम मुझे लिबरेटर ,गाइड कहते हो ना। हम तुमको इस पुरानी दुनियां ,दुःख से लिबरेट कर शांतिधाम,सुखधाम ले जाते हैं। बच्चे समझते हैं हम वाया शांतिधाम सुखधाम जावेंगे। बाकी सब शांतिधाम चले जावेंगे। दुःख से बाप आये सदगति करते हैं। जो भी धर्मस्थापक और उन्हों की संस्था है सब यहां ही है। सबकी सदगति बाप ही आय कर करते हैं। उनका जन्म–मरण तो है नहीं। बाप आया ,फिर चला जावेगा। उनके लिए नहीं कहेंगे कि मर गया। जैसे शिवानंद के लिए कहेंगे शरीर छोड़ दिया। फिर क्रियाकर्म आदि बहुत (कुछ) करते हैं। यह बाप चला जावेगा इनका क्रियाकर्म सिरोमणि आदि कुछ भी नहीं करना होता है। उनका तो आने का भी पता नहीं पड़ता। क्रियाकर्म आदि की बात ही नहीं। और सभी मनुष्यों की क्रियाकर्म करते हैं। बाप की क्रियाकर्म होती ही नहीं। उनका शरीर ही नहीं। सभी मनुष्य सरसों मिसल पिस कर खलास हो जाते हैं। सतयुग में यह ज्ञान–भक्ति की बात होती ही नहीं। यह अभ ही चलती है। और सभी भक्ति ही सिखलाते हैं। आधा कल्प है भक्ति। रावणराज्य में भक्ति शुरू होता है। फिर आधा कल्प ज्ञान रहता है। बाप आय ज्ञान का वर्सा देते हैं। ज्ञान कोई वहां साथ नहीं चलता। वहां बाप को याद करने की दरकार नहीं रहती। मुक्ति है वहां याद करना होता है क्या?नहीं। भक्ति भी पीछे वृद्धि होती है। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति। फिर व्यभिचारी। इस समय तो अति व्यभिचारी भक्ति है। इसको रौरव नर्क कहा जाता है। एकदम तीखे में तीखा नर्क है। फिर बाप आकर तीखे में तीखा स्वर्ग बनाते हैं। इस समय है सौ प्रतिशत दुःख। फिर सौ प्रतिशत सुख–शांति होगा। आत्मा अपने घर जाय विश्राम पावेगी। समझाने में बड़ा सहज है। अभी तुम समझते हो रचना के आदि,मध्य,अंत को बाप द्वारा जान गए हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूं जब नई दुनियां की स्थापना कर पुरानी दुनियां का विनाश करना है। इतना कार्य सिर्फ एक तो नहीं करेंगे। खिजमतगार बहुत चाहिए। इस समय तुम बाप के खिजमतगार बनते हो। भारत की खास सच्ची सेवा करते हो। सच्चा बाबा सच्चा सेवा सिखलाते हैं। अपना भी ,भारत का भी और विश्व का भी कल्याण करते हो। तो कितना रूचि से करना चाहिए। बाप कितना रूचि से सर्व की सदगति करते हैं। अब भी सदगति होनी है। जरूर यह है शुद्ध अहंकार। शुंद्ध भावना। तुम सच्ची2 सेवा करते हो ;परंतु गुप्त। आत्मा करती हैं शरीर द्वारा। तुमसे बहुत पूछते हैं ब्रह्माकुमारियों का उद्देश्य क्या है?बोलो ब्रह्माकुमारियों का उद्देश्य है विश्व में सतयुगी सुख–शांति का राज्य स्थापन करना। हम हर 5000वर्ष बाद विश्व में शांति श्रीमत पर स्थापन कर विश्व शांति की प्राइज लेते हैं। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। प्राइज तो लेती है ना। नर्कवासी से स्वर्गवासी बनना कम प्राइज है?वह पीस प्राइज लेकर खुश होते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। कुक्छ भी समझ नहीं है। बिल्कुल ही बेसमझ हैं। सच्ची2 पीस प्राइज तो हम बाप से ले रहे हैं। कहते हैं ना भारत हमारा उंच देश है। कितनी महिमा कहते हैं। सभी समझते हैं हम भारत के मालिक हैं ;परंतु मालिक हैं कहां?अभी तुम बच्चे जानते हो हम बाबा के श्रीमत पर राज्य स्थापन करते हैं। हथियार–पवार तो कुछ भी नहीं। दैवी गुण धारण करते हैं। इसलिए तुम्हारा ही गायन है। पूजन है। अम्बा के देखो कितने पुजारी हैं ;परंतु अंधश्रद्धा। अम्बा कौन है, ब्राह्मण वा देवता यह भी पता नहीं। अम्बा भगवान तो नहीं है। अम्बा तो ब्राह्मणी ही है। तुम उनके औलाद हो। ब्रह्मा ,आदिदेव। उनकी बेटी है अम्बा। काली,दुर्गा,सरस्वती आदि आदि बहुत नाम हैं। यहां भी नीचे अम्बा का छोटा सा मंदिर है। अम्बा को भुजायें दे दी हैं। ऐसे तो है नहीं यह सब हैं अंधश्रद्धा। अम्बा पास आये हो। बाबा कहां?अम्बा से तो बाबा बड़ा होता है ना। तो इसको कहा जाता है ब्लाइंड फेथ। क्राइस्ट ,बुद्ध आदि आये। उन्होंने अपना धर्म स्थापन किया। तिथि–तारीख सब बताते हैं। ब्लाइड फेथ की बात नहीं। यहां

भारतवासियों को कुछ पता नहीं है हमारा धर्म किसने और कब स्थापन किया। इसलिए कहा जाता है ब्लाइंड फेथ। अभी तुम पुजारी हो। पूज्य बन रहे हो। तुम्हारी आत्मा भी पूज्य तो शरीर भी पूज्य बनता हैं तुम्हारी आत्मा की भी पूजा होती है। फिर देवता बनते हो तो भी पूजा होती है। बाप तो है ही निराकार। वह सदैव पूज्य है। वह कब पुजारी नहीं बनते। तुम बच्चों के लिए कहा जाता है आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी। बाप तो एवर पूज्य है। यहां आकर बाप सच्ची सेवा करते हैं। सबको सदगति देते हैं। बाप कहते हैं अब मामेकम् याद करो। दूसरे कोई देहधारी को याद नहीं करना है। यहां तो बहुत हिंदू हैं। मुसलमान की जाय पूजा करते हैं। उनको पांव पड़ते हैं। बड़े लखपति–करोड़पति जाकर लाय अलाय.....कहते हैं। कितन अंधश्रद्धा है। बाप ने तुमको अब हम सो का अर्थ समझाया है। वह तो कह देते हैं शिवोहम। आत्मा सो परमात्मा। अब बाप ने करके बताया है। अब जज करो भक्तिमार्ग में राइट सुना है या हम राइट बताते हैं। हम सो का अर्थ बहुत लम्बा–चौड़ा है। हम सो ब्राह्मण,फिर हम सो देवता बन रहे हैं। फिर क्षत्रिय बनेंगे। फिर शूद्र कुल में आवेंगे। अब हम सो अर्थ का अर्थ कौन सा राइट है। हम आत्मा चक्र में ऐसे आती हैं। विराट रूप का चित्र भी है। इसमें चोटी ब्राह्मण और बाप को दिखाया नहीं है। देवताएं कहां से आये?कलियुग में तो हैं शूद्र वर्ण। सतयुग में फर्स्ट से देवता वर्ण कैसे होगा?कुछ भी समझ नहीं। भक्ति मार्ग में कितने मनुष्य रहते हैं। कोई ने ग्रंथ पढ़ लिया, खयाल आया, मंदिर बनाय लिया। बस, ग्रंथ बैठ सुनावेंगे। बहुत मनुष्य आ जाते। बहुत फालोअर्स बन जाते हैं। फायदा कुछ भी नहीं। आजकल शास्त्र बहुत सुनाते हैं। बहुत दुकान निकल गई है। अब यह सब दुकान खतम हो जावेगा। यह सब दुकानदारी भक्तिमार्ग में है। इनसे बहत धन कमाते हैं। सन्यासियों को वास्तव में शिव की पूजा करनी नहीं चाहिए। वह है ही ब्रह्मयोगी ,तत्वयोगी। जैसे भारतवासी वास्तव में हैं देवी देवता धर्म की;परंतु हिंदुस्तान में रहने कारण हिंदू धर्म कह देते हैं। वैसे ब्रह्म तो महातत्व है, जहां आत्माएं रहती हैं। उन्हों(ने) फिर ब्रह्मज्ञानी तत्वज्ञानी नाम रख दिया है। नहीं तो ब्रह्मतत्व है रहने का स्थान। तो बाप समझाते हैं कितनी भारी भूल कर दी है। अपन को ब्रह्मयोगी,तत्वयोगी कह देते हैं। यह सब हैं भ्रम में। मैं आकर सब भ्रम दूर करता हूं। भक्तिमार्ग में कहते हैं हे प्रभु तुम्हारी गतमत न्यारी है। गत तो कोई कर न सके। मत तो अनेक की मिलती है। यहां एक की मत कितनी कमाल कर देती है। सारी विश्व को चेंज कर देती है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है इतने सब धर्म कैसे आते हैं। फिर आत्माएं कैसे अपने2 सेक्शन में जाय रहते हैं। यह सब ड्रामा में नूंध है। यह भी बच्चे जानते हो दिव्य दृष्टि दाता एक बाप ही है। बाबा को कहा बाबा यह चाभी हमको दे तो हम किसको सा. कराय दें। बोला नहीं। यह चाभी किसको मिल नहीं सकता। इनके एवज में तुमको फिर विश्व की बादशाही देता हूं। मैं लेता हूं। मेरा पार्ट फिर यह है सा. कराने का। सा. होने से कितना खुश हो जाते हैं। मिलता तो कुछ भी नहीं। ऐसे नहीं कि सा. से कोइ निरोगी बन जाते हैं या धन मिलता है। नहीं। सिर्फ सा. की खुशी होती है। जिसकी भक्ति करते हैं वह चैतन्य में देखने में आते हैं। ऐसे बहुत कहते हैं हमको सा. हो तो शिवबाबा बन जाउंगा। बाप कहते हैं सा. से कोई फायदा नहीं। मीरा को सा. हुआ ;परंतु मुक्ति को थोड़े ही पाया। मनुष्य समझते हैं वह रहती ही वैकुंठ में थी ;परंतु वैकुठ कृष्णपुरी कहां?यह सब है सा.। बाप बैठ सब बातें समझाते हैं। इनको भी पहले वैकुंठ का सा. हुआ। तो बहुत खुश हो गया। वह भी जब देखा मैं महाराजा बनता हूं ,विनाश भी देखा फिर राजाई का भी देखा तब निश्चय बैठा ओहो मैं तो विश्व का मालिक बनता हूं। बाबा की प्रवेशता हो गई। बस, बाबा यह सब आप ले लो। हमको तो विश्व की बादशाही चाहिए। तुम भी यह सौदा करने आये हो। जो ज्ञान उठाते हैं उनको फिर भक्ति से जैसे नफरत आवे

वह ज्ञान को पकड़ लेते हैं ;क्योंकि पहले आने वाले ....बहुत हैं जो भल ज्ञान भी लेते हैं फिर भी भक्ति की जो हेर पड़ी हुई है ,अम्बा का दश्नन करना ,यह करना,तीर्थों पर जाना। हेर पड़ी है तो चले जाते हैं। सेंटर सम्भालने वाली ब्राह्मणी भी कोई के साथ यात्राओं पर चली जाती है। कच्चे हैं ना। कोई कहते हैं हमारे साथ तीर्थ यात्रा पर चलो तो घूमने चले जाते हैं। तुम बच्चों को तो भारत की सेवा में मददगार बनना है। फुरी2 तालाब भरता है ना। कहते हैं बाबा हमारी यह एक/दो रुपये की ईंट लगाय देना। बाबा कहते हैं तुम्हारा यह बहुत बन जाता है। तुम पदमपति बनने वाले हो। सुदामा की चावल मुट्ठी का भी गायन है ना। बाप को कहा ही जाता है गरीब निवाज। जिन गरीब पास कुछ भी नहीं है। उन्हों को बहुत मिलता है। यहां जो गरीब हैं वह वहां बहुत साहुकार बनते हैं। जो साहुकार हैं वह यहां ही अपन को स्वर्ग में समझते हैं। वह वहां गरीब बन जाते हैं। साहुकारों को तुम्हारे क्लास में बैठने (में) ही लज्जा आवेगी। वहां सन्यासियों आदि के सतसंग में तो देखो कितने मोटरें खड़ी हो जाती हैं। भभका रहता है। लाखों मनुष्य जाते हैं। अभी तुम समझते हो सब है झूठ। पहले नम्बर की झूठ जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। कृष्ण भगवानुवाच, मैं सर्वव्यापी हूं। अब कृष्ण तो ज्ञान देते नहीं। कृष्ण तो देहधारी है। बाप कहते हैं भक्ति है अज्ञान। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। भक्ति में जो भी रहते हैं कहा जाता है कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। जब भंभोर को आग लगेगी तब फिर जागते हैं। लिखा हुआ भी है आखरीन पांडवों की जीत हुई कौरवा हारे। फिर नतीजा क्या हुआ कुछ भी पता नहीं। गीता पढ़ने वाले बहुत होंगे। पूछो महाभारत लड़ाई हुई रिजल्ट क्या हुआ?कुछ पता नहीं। दिखाते हैं प्रलय हुई। फिर सागर में पिपर के पत्ते पर कृष्ण आया। अभी यह हो कैसे सकता? पिपर के पत्ते पर तो बालक भी डूब जावेगा। मनुष्य तो सब सत–सत कहते रहते। बड़ी प्रलय तो होती ही नहीं है। यह भारत खंड तो अविनाशी है और जो भी खंड हैं वह खाली हो जाते हैं। यह है अविनाशी खंड। बाप कहते हैं मैं जहां आता हूं यह खंड कब विनाश नहीं होता। यह भी तुम जानते हो। मनुष्य तो समझते हैं बहुत दुनियायें हैं। मून में भी प्लाट्स ढूंढते रहते हैं। कितनी चर्चायें हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। आत्मा पर जंक चढ़ गई है। बैटरी खाली हो गई है। इसको फिर भरना है। मोटर की बैटरी खाली हो जाती है तो फिर चार्ज कराते हैं। तुम्हारी बैटरी भी खाली हो गई है। अब फिर भरेगी। एक ही बाप बड़ी पावर है। आत्मा कितनी छोटी है। बाप समझाते हैं बाप के साथ योग लगाओ तो बैटरी जो ढीली हो गई है वह तीखी हो जावेगी। ब्रह्मसमाजी वालों पास मंदिर में सदैव ज्योत जगी रहती है। उनको ईश्वर समझते हैं ;परंतु ज्योत से क्या होगा?दुनियां में मनुष्यों की अनेकानेक मत है। यहां है एक मत बाप आय सबकी सदगति करते हैं। भारत खंड ही सबका तीर्थ है। यहां ही सदगति करने वाला बाप आते हैं। तब बाबा ने कहा था कि जन्मदिन मनाना है तो एक ही शिवबाबा का मनाना है। और किसका भी जन्मदिन मनाना अर्थात् बर्थ नॉट अपेनी है। इस बात से भी बिगड़ने लगे कि तुम ऐसे के लिए बर्थ नॉट अपेनी कहते हो। तुम बच्चे जानते हो कि बाप ही सबको बर्थ नॉट अपेनी बनाते हैं। सबकी सदगति करते हैं। भक्ति से दुर्गति होती है। फिर भी जिनकी तकदीर में न होगा भक्ति छोड़ेंगे नहीं। तुम समझ जावेंगे यह ताजी भक्त है। पुराने नहीं हैं। पुराने भक्त जो होंगे वह झट चटक पड़ेगे। उनको ही पहले फल मिलेगा। कम भक्ति करने वाले होंगे तो वह धीरे2 बाद में आवेंगे। यहां यह मालूम पड़ जाता है। बड़ा भक्त कौन है?कोई तो एकदम चटक पड़ते है। जैसे शमा पर परवाने आते हैं। कोई फिदा हो जाते। कोई फेरी पहन चले जाते हैं। शास्त्रों में उल्टा–सुल्टा लगाय दिया हैं इसलिए मूंझे हैं। शास्त्र है उन्हों की जान–जिगर। कहते हैं भगवान कहे शास्त्र न पढ़ो तो भी हम नहीं मानेंगे। यहां तो तुम्हारा डायरैक्ट बाप से कनेक्शन है। कितन सहज समझाते हैं। अच्छा, मीठे सिकीलधे बच्चों को यादप्यार गुडमार्निंग। ओम।